IJAER/ Aug-September 2012 /Volume-1/Issue-2/Article No-32/ 223-226 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

रूड़की नगर धार्मिक परिदृश्य एवं मान्यतायें– एक सामान्य अध्ययन

डॉ० (श्रीमती) अलका तोमर
शोध निर्देशिका
राजनीति विज्ञान विभाग
एच०एन०बी० गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल)

श्रीमती आशा शर्मा
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
एच०एन०बी०गढ़वाल(केन्द्रीय) विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल)

सारांश–
रूड़की नगर मैदानी तथा पर्वतीय क्षेत्रों की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के साथ ही मिश्रित जीवन शैली लक्षित होती है। इतना ही नहीं इस नगर में अब आधुनिक जीवनशैली को भी अपनाना प्रारम्भ कर दिया है। रूड़की में भी सामान्य मान्यताओं एवं रीतिरिवाजों को आज भी माना जाता है। यहाँ विभिन्न धर्मों का समावेश पाया जाता है।

कुंजी शब्द– धार्मिक परिदृश्य, मान्यतायें, सामान्य अध्ययन।

प्रस्तावना–

रूड़की नगर के समस्त नागरिकों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन एक समान नहीं है। दीर्घकाल से देश के विभिन्न प्रान्तों एवं निकटवर्ती क्षेत्रों से विभिन्न लोग यहाँ आकर बसते रहे हैं। इस नगर में मैदानी तथा पर्वतीय क्षेत्रों की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के साथ ही मिश्रित जीवनशैली लक्षित होती है। इतना ही नहीं इस नगर में अब आधुनिक जीवनशैली को भी अपनाना प्रारम्भ कर दिया है। रूड़की नगर में निम्नलिखित धार्मिक स्थल हैं–

1- **राम–मन्दिर–**

नहर के दायें किनारे पर नगर और सिविल लाइन को जोड़ते हुए जो पुल बना है वहाँ प्राचीन राम–मन्दिर है। यहाँ पर नगर निवासी तथा हरिद्वार जाने वाले तीर्थ–यात्री पूजा–अर्चना, भजन कीर्तन, रात्रि विश्राम आदि तो करते ही हैं साथ ही बाहर से आने वाले सन्त एवं महात्मा धार्मिक उपदेश देकर जनता को लाभान्वित भी करते हैं।

2- **शिव–मन्दिर–**

राम– मन्दिर के विपरीत बायें किनारे पर सिविल लाइन में प्रवेश करते ही प्राचीन शिव मन्दिर है। यहाँ श्रावण मास में हरिद्वार तथा ऋषिकेश से कांवड़ लेकर आये हुए कांवड़िये भी विश्राम करते हैं और शिव प्रतिमा पर गंगाजल का अभिषेक करते हैं। यहाँ पर श्रावण मास में 40 दिनों तक निरन्तर पूजा अर्चना होती है। ऐसी मान्यता है कि इन दिनों पूजा अर्चना करने से प्रत्येक मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

3- **आर्य समाज मन्दिर–**

मौहल्ला बी०टी०गंज में आर्य समाज मन्दिर स्थापित है, जिसका शिलान्यास स्वामी दयानन्द जी ने अपने हाथों से किया था। यहाँ भी प्रतिसन् वेद व्याख्यान और भोजनोपदेश निरन्तर तीन दिनों तक चलते रहते हैं। प्रत्येक रविवार को नगर के गणमान्या विद्वान यज्ञ करते हैं और आपस में विचारों का आदान–प्रदान कर समाज में व्याप्त बुराईयों एवं कुरीतियों को दूर करने का संकल्प भी लेते हैं।

4- राममन्दिर– रामनगर–

सन् 1947 में भारम बंटवारे के पश्चात् पाकिस्तान से निष्कासित शरणार्थी जी०टी०रोड़ के पश्चिम की ओर रामनगर कालोनी में आकर बसे और वहाँ उन्होंने एक भव्य राममन्दिर का निर्माण कराया। यहाँ प्रातः सायं धार्मिक लोग पूजा– अर्चना एवं कीर्तन करते हैं। साथ ही यदा–कदा सन्त महात्मा भी आकर अपने ज्ञान से लोगों का मार्गदर्शन करते हैं। विशेषकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्रीरामनवमी तथा शिव त्रयोदशी (महाशिवरात्रि) के पर्व भी धूमधाम से मनाये जाते हैं और बाजे–गाजे के साथ झांकियाँ सजाकर नगर का भ्रमण किया जाता है।

5- गुग्गा पीर की माहड़ी–

नगर के पश्चिमी और दक्षिणी द्वार पर आजाद नगर की पुलिया है जिसकी कुछ दूरी पर दक्षिण में गुग्गा पीर की माहड़ी है। यहाँ प्रतिसन् भाद्रपद की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को छड़ियों का मेला लगता

है। इसके पश्चात् छड़ी पहुँचाने वाले लोग भाद्रपद की शुक्ल दशमी को सहारनपुर की गुग्गा पीर माहड़ी पर जाकर अपने निशान चढ़ाकर मन्नतें माँगते हैं।

6- **प्रेम–मन्दिर–**

सिविल लाइन में ही अभी कुछ वर्षों पहले प्रेम–मन्दिर की स्थापना की गयी है। इस मन्दिर में भी धार्मिक लोग पूजा अर्चना करते हैं। साथ ही यहाँ समय–समय पर सन्त महात्मा आकर अपने धार्मिक उपदेशों से लोगों को लाभान्वित करते हैं।

7- **गुरूद्वारा–**

रामनगर चौक के ठीक दक्षिण में जी०टी० रोड़ के किनारे भव्य गुरूद्वारा भी बना हुआ है। जिसमें गुरू ग्रन्थ साहब का निरन्तर पाठ चलता रहता है। गुरूओं के जन्मदिन पर उत्सव मनाया जाता है। सिंह सभा, रूड़की के गणमान्य व्यक्तियों के सौजन्य से यहाँ अब लड़के–लड़कियों की शादियाँ भी एक साथ कई–कई जोड़ों को मिलाकर करायी जाती हैं। जिसका रजिस्ट्रेशन पहले से ही कराना होता है। इसके अतिरिक्त नगर में भी नहर के किनारे पर एक प्रसिद्ध गुरूद्वारा है, जहाँ लंगर की व्यवस्था तथा गुरूग्रन्थ साहब का पाठ समय–समय पर होता रहता है।

रूड़की में मनाये जाने वाले पर्व, त्यौहार एवं मेले–

रूड़की नगर में अनेक मेलों का आयोजन किया जाता है जिसमें रामलीला एवं कांवड़ मेले का विशाल आयोजन होता है।

- **दीपावली–**
  यह त्यौहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन घरों में सफाई कर रोशनी की जाती है तथा लक्ष्मी गणेश का पूजन किया जाता है।
- **गोवर्द्धन पूजा–**
  दीपावली से अगले दिन गोवर्द्धन पूजा होती है। घर में महिलायें गोबर के उपले बनाकर एक विशेष आकृति में रखती हैं। सन्ध्या के समय किसान लोग गन्ने, रूई, खुरपा, दराती आदि रखकर तेल का दीपक जलाते हैं और गुग्गल की धूप को सभी पशुओं को सुंघाते हैं।
- **भैया दूज–**
  गोवर्द्धन के अगले दिन भैया दूज का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन बहनों को कपड़े, मिठाई, खील आदि दिए जाते हैं। बहनें अपने भाईयों के माथे पर तिलक लगाकर उनकी सुखद तथा लम्बी आयु की कामना करती हैं और दक्षिणा प्राप्त करती हैं।
- **दशहरा–**
  इस दिन क्षत्रिय लोग अपने हथियारों तथा वैश्य अपने बहीखातों का पूजन करते हैं। बहनें अपने भाईयों के कानों पर नौरते रखती हैं। दो दिन पूर्व दुर्गाष्टमी को कन्याओं को भोजन कराकर यथासम्भव दक्षिणा देकर लोग उपवास खोलते हैं। कहा जाता है कि विजयदशमी को भगवान राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी तभी से यह त्यौहार मनाया जाता है।
- **होली–**
  इसके पूजन के लिए एक निश्चित स्थान होता है। जहाँ होली रखी जाती है। वहीं बसन्त पंचमी के दिन पूजन किया जाता है। इसी दिन से लोग उस स्थान पर लकड़ी और उपले डालना प्रारम्भ कर देते हैं। होली के दिन महिलायें होली पूजन करती हैं। बच्चे पहले से बनाए गोबर के चाँद–सूरज, बड़कलों की मालायें लेकर जाते हैं और उन्हें होली में डालते हैं। बताए गए मुहूर्त पर होली में कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति या पण्डित आग को प्रज्वलित करता है जिसे ग्रामीण भाषा में **'दहन'** करना भी कहा जाता है। अगले तीन दिन तक फाग खेला जाता है। एक दूसरे के गले मिलकर होली की बधाई दी जाती है।
- **हरियाली तीज–**
  यह महिलाओं का त्यौहार है। यह त्यौहार सावन में तीज के दिन मनाया जाता है। इस दिन महिलायें हाथों पर मेंहदी लगाकर झूला झूलती हैं। घरों में पकवान बनाये जाते हैं। चारों ओर हरियाली तीज के लोकगीतों से वातावरण गूँज उठता है। इसे झूला तीज भी कहा जाता है। विवाह के बाद प्रथम तीज लड़कियाँ अपने माता–पिता के घर पर ही मनाती हैं। इस त्यौहार पर माता–पिता अपनी लड़की के लिए **'कोथली'** सौगात भेजते हैं।

- **कृष्ण जन्माष्टमी–**
  यह भादों के महीने की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। इसी दिन अर्द्धरात्रि को भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था। धार्मिक प्रवृत्ति के लोग इस दिन उपवास रखकर फलाहार ग्रहण करते हैं। मन्दिरों को सजाया जाता है तथा भगवान कृष्ण की पूजा की जाती है।
- **करवा चौथ–**
  यह त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को होता है। इस त्यौहार को सुहागिन महिलायें मनाती हैं। ये महिलायें उपवास रखती हैं। घर में पकवान बनाए जाते हैं। शाम को करवा में रंगोली बनाकर जल भरकर निश्चित स्थान पर चन्द्रमा की पूजा की जाती है। एक थाली में पकवान (बायणा) रखकर घर के किसी वृद्ध या वृद्धा को दिए जाते हैं। उपवास रखने वाली महिलायें चाँद दिखाई देने पर उसको जल समर्पित करने के पश्चात् ही भोजन करती हैं तथा ईश्वर से अपने पति की दीर्घायु की कामना करती हैं।
- **अहोई–अष्टमी–**
  इस त्यौहार को पुत्रवती महिलायें मनाती हैं। यह त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन पुत्रवती महिलायें उपवास रखती हैं। घरों में पकवान बनाए जाते हैं। शाम को करवों पर रंगोली बनाकर एक निश्चित स्थान पर पूजन किया जाता है। एक थाली में पकवान रखकर परिवार के वृद्ध या वृद्धा को खाने के लिए दिया जाता है। जिसे (बायणा) कहा जाता है। रात को महिलायें तारा देखकर ही उपवास तोड़ने के बाद भोजन करती हैं।
- **रक्षाबन्धन–**
  यह त्यौहार श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों के हाथों में राखी बाँधकर उनकी दीर्घायु की कामना करती हैं और भाई अपनी बहनों को जीवन की रक्षा का वचन देते हैं।
- **शब–ए–बारात–**
  यह मुस्लिम समाज का त्यौहार है। इसे इबादत की रात कहा जाता है। इस रात को पूरी रात जागकर खुदा से अपनी खुशहाली के लिए दुआ की जाती है।
- **रमजान–**
  रमजान के पवित्र महीने में रोजे रखे जाते हैं। रोजा रखने वाले प्रातः लगभग 4 बजे (मौसम के अनुसार समय परिवर्तन होता रहता है) भोजन कर लेते हैं। जिसे सहरी कहा जाता है। पूरे दिन अन्न एवं जल ग्रहण नहीं किया जाता है। शाम को रोजा इफ्तार करने के बाद ही भोजन करते हैं। इस माह में लोग दान–पुण्य करते हैं। रोजा खोलने को (रोजा इफ्तारी) कहा जाता है।
- **ईद–उल–फितर–**
  रमजान माह में रोजों की समाप्ति पर जिस दिन चाँद दिखाई देता है उस दिन यह त्यौहार मनाया जाता है। सभी लोग नए कपड़े पहनते हैं। नमाज के बाद एक दूसरे के गले मिलकर ईद की मुबारकबाद देते हैं। मिठाई बाँटी जाती है। घरों में विशेष तैयारी के साथ सिवईंयाँ तैयार की जाती हैं।
- **ईद–उल–अजहा (बकरीद)–**
  यह त्यौहार हजरत मौहम्मद साहब की कुर्बानी की याद में मनाया जाता है।
- **क्रिसमस डे–**
  यह ईसाई समाज का सबसे बड़ा त्यौहार है जो प्रभु ईसा मसीह के जन्म दिवस पर प्रत्येक वर्ष 25 दिसम्बर को मनाया जाता है।
- **लोहड़ी एवं बैसाखी–**
  रूड़की नगर में पंजाबी समाज के लोग भी निवास करते हैं जिनके द्वारा लोहड़ी और बैसाखी के त्यौहार भी बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं।

रूड़की में गाए जाने वाले लोकगीत–

लोकगीत समाज, परिवेश, परिस्थिति, वातावरण तथा घटना विशेष के परिणामस्वरूप व्यक्तिगत अथवा सामूहिक भावनाओं की गेय अभिव्यक्ति होती है। लोकगीत लिखने अथवा गाने के लिए व्यक्ति को न तो संगीत शास्त्र की बारीकियों का ज्ञाता होना आवश्यक होता है और न ही काव्यात्मकता का पारखी ही। लोकगीत का मूल मानवीय संवेदना है। इसकी बाह्य अभिव्यक्ति

सामाजिक रीति-रिवाजों, खान-पान, जीवन-यापन की पद्धति, धार्मिक, आर्थिक परिस्थिति तथा उस स्थान की बोली से प्रभावित होती है। इस प्रकार लोकगीत प्रान्त विशेष की अपनी पूँजी होती है। विभिन्न स्थानों के लोकगीतों में भिन्नता होती है।

रूड़की नगर में लोकगीतों में अधिकतर संस्कार गीत होते हैं। जन्म, छठी, मुण्डन, जनेऊ, सगाई, लगन, हलद, भात, घुड़चढ़ी, फेरे, भोजन के समय गाली देना और विदाई आदि अवसरों पर खुशी और उल्लास के समय विभिन्न प्रकार के लोकगीतों को गाने की परम्परा है। पुत्र तथा कन्या विवाह पर अलग-अलग ढंग से संस्कार होते हैं। लड़के के वैवाहिक सन्दर्भ में भाभी के द्वारा काजल लगाया जाना, बारात प्रस्थान के बाद वर के घर पर **'कोयल'** तथा **'खोड़िया'** तथा वधू आगमन पर **'रतजगा' 'छठिया'** जैसे संस्कार किए जाते हैं। लड़की के घर पर बारद्वारी, बारात आगमन और भोजन के अवसर पर **'सीठने'** तथा **भाँवर, कंगना,** धान-बुआई और विदा के समय **'बाधवा'** गाया जाता है। इनके अतिरिक्त विशेष अवसरों पर साँझी, सावन और होली आदि के गीत गाए जाते हैं।

- **लोक वाद्य-**
  यहाँ के लोक वाद्यों में सारंगी, मोरबीन, ढ़ोल, ढ़पली, नगाड़ा, नफीरी, रणसिंघा, हारमोनियम,तुनतुना (लौकी का इकतारा जैसा वाद्य यन्त्र) तथा घड़ा बजाना आदि हैं।
- **रीति-रिवाज एवं विश्वास-**
  प्रत्येक क्षेत्र के अपने विशेष रीति रिवाज, धार्मिक मान्यतायें तथा विश्वास होते हैं जिनसे उनकी संस्कृति की अलग पहचान बनती है। यहाँ के लोग देवी देवताओं और पीर पैगम्बरों में विश्वास रखते हैं। किसी न किसी रूप में जादू टोना और तन्त्र-मन्त्र का सहारा लेते हैं। आज भी यदि वर्षा ऋतु में लम्बे समय तक वर्षा नहीं होती है तो किसान शिवमन्दिर में इतना पानी भरते हैं जिससे मन्दिर में स्थित शिवलिंग डूब जायं और तब तक पानी नहीं निकालते जब तक वर्षा नहीं हो जाती है। वर्षा न होने पर गाँव की कन्यायें गुड्डे-गुड़ियों का विवाह कर वर्षा की कामनायें करती हैं।

निष्कर्षतः माना जा सकता है कि रूड़की में भी सामान्य मान्यताओं एवं रीतिरिवाजों को आज भी माना जाता है।

सन्दर्भग्रन्थ-

1. जायसवाल, के०पी० (1955) 'हिन्दू पॉलिटी' पी०एण्ड पी०, बंगलौर सिटी।
2. अर्गल, आर० (1955) 'म्यूनिसीपल गवर्नमेन्ट इन इण्डिया' अग्रवाल प्रैस, इलाहाबाद।
3. नवानी, लोकेश (2001) उत्तरांचल ईयर बुक, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून।
4. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, वाल्यूम-4।
5. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, वाल्यूम- 21।
6. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, वाल्यूम- 24।
7. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, वाल्यूम- 1।